कला का राजनीतीकरण होना चाहिए. कला कभी अराजनीतिक नहीं होती है. किसी भी तरह से राजनीति एक खराब शब्द नहीं है.
टीएम कृष्णा, गायक

प्रभात खबर
रांची, सोमवार
31.12.2018
11

चुनौती भरी रही सामाजिक समरसता

जैसे प्रकृति धरती को बंजर होने से बचाती है, ठीक वैसे ही साहित्य-कला-संगीत मनुष्यों को. लेखकों, कलाकारों की मौजूदगी समाज को सभ्य बनाती है, तो उनकी दृष्टि हमारे समय और समाज का दस्तावेज भी तैयार करती है. गुजरता साल उन्हीं के हवाले से आज की विशेष प्रस्तुति में...

दु:स्वप्न जैसा गुजरा यह साल

साल 2018 एक दु:स्वप्न जैसा गुजरा है. कुछ ही चीजें अच्छी हुईं, नहीं तो बाकी चीजों ने बहुत निराश किया. इस साल ने हमें जो दिखाया है, वह निश्चित रूप से एक लोकतांत्रिक भारत के लिए ठीक नहीं है. हमने समाज में सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ते देखा. मुसलमानों और दलितों के प्रति हिंसा और विरोध को बढ़ते देखा. लेखकों, बुद्धिजीवियों और स्वतंत्र विचारकों पर तरह-तरह के दमन देखे. मीडिया को और भी गुलाम बनते हुए देखा. साहित्य, कला और सांस्कृतिक संस्थाओं में जहर फैलते और उन्हें अयोग्य हाथों में जाते देखा. हमने सत्ताधारी दल के विभिन्न मंत्रियों, नेताओं और समर्थकों के ऊटपटांग तर्क और मूर्खतापूर्ण बयानों की बाढ़ देखी, जिसका किसी भी प्रकार की वैज्ञानिकता से कोई संबंध नहीं है. कुल मिला कर अपने प्यारे देश को वैचारिक स्तर पर पीछे जाते देखा.

मंगलेश डबराल
वरिष्ठ कवि

भविष्य के जो सवाल हैं, उनके जवाब अतीत में नहीं मिलते हैं. भविष्य के संबंध में अतीत के सिर्फ अनुभव काम आ सकते हैं, अतीत के तथ्य नहीं, लेकिन हमने बीते सालों में देखा कि भारत को किस तरह से उसके भविष्य के सारे जवाब अतीत से खोजने की सिर्फ कोशिशें ही नहीं हुईं, बल्कि जबरन कोशिशें हुईं. हमने देखा कि सत्तारूढ़ शीर्ष नेता किस तरह से एकाधिकारवादी राजनीति कर रहे हैं. यह सब एक दुखद जाल की तरह हमारे समाज पर छाया हुआ है, लेकिन यह भी सुखद है कि प्रतिरोध की आवाजें भी उठी हैं और लोग गलत का विरोध कर रहे हैं. आम जन का घुटन एक व्यापक असंतोष बनकर सामने आ रहा है.

हमारे देश का सामाजिक ताना-बाना बहुत मजबूत है. यहां जितने अधिक संप्रदाय, जातियां, धार्मिक शाखाएं, संस्कृतियां और इतने तरह के रहन-सहन हैं, शायद ही किसी अन्य देश में हों. इन सबके बीच अंतर्निर्भरता भी बहुत गहरे तक है, चाहे वह काम-काज की हो या फिर रहने-जीने-खाने की. एक-दूसरे के बिना काम नहीं चलता है. ऐसे समृद्ध समाज में बीते सालों में ध्रुवीकरण करने की लगातार कोशिशें होती रहीं और बहुसंख्यकवादी वर्चस्व की राजनीति बेहद आक्रामक ढंग से समाज पर लादी गयी. इससे बहुत हमारा सामाजिक ताना-बाना कुछ टूटा है और सामाजिक दरारें आयी हैं, जिन्हें पाटने में अब काफी वक्त लगेगा. फिर भी, अंततः यह सामाजिक ताना-बाना इतना मजबूत है कि उसकी आत्मा को अभी तक नुकसान नहीं पहुंचा है, जिसकी कोशिशें भ्रष्ट राजनीति करती रही है. भारतीय जनमानस को चलानेवाले छोटे-मोटे उद्योग से लेकर बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक सद्भाव देखने को मिलता है, जिसे तोड़ने की कोशिशें हो रही हैं, मगर इसमें इतनी बहुवचनीयता है कि यह नहीं टूट रहा है. हमें आनेवाले साल से यही उम्मीद है कि यह कभी न टूटने पाये. हमारी बहुवचनीयता और विविधता ही हमारी ताकत है, जिसे किसी भी कीमत पर टूटने नहीं देना चाहिए. हिंदी के बड़े कवि रघुवीर सहाय कहते थे- हमारे यहां अनेकता में एकता नहीं है, बल्कि एकता में अनेकता है. एकता में अनेकता वाले इस समाज को बहुत ज्यादा समय तक बरगलाया नहीं जा सकता है. कुछ समय तक इसे गुमराह किया जा सकता है, लेकिन हमेशा नहीं, क्योंकि समाज की संरचना तो तोड़नेवालों को एक जवाब की तरह है. यही बात इस साल के दु:स्वप्न के सामने एक संबल बनी.

अब हमारा समाज जवाब देने लग गया है, क्योंकि यह पहचानने लगा है कि उसे बरगलाया जा रहा है. इसलिए नये साल में मुझे यही उम्मीद है कि यह समाज और मजबूती से जवाब देगा और गुमराह करनेवालों को डटकर जवाब देगा. हमारे देश का भविष्य और लोकतंत्र इस बात पर नहीं टिका हुआ है कि वह सांप्रदायिकता के साथ जीये. यही वजह है कि बीते सालों में जिन लोगों ने इस समाज पर खतरा पैदा किया है, उन पर भी अब खतरों के बादल मंडरा रहे हैं. मैं समझता हूं कि आगामी साल से हमें इसी बात की उम्मीद होनी चाहिए कि हमें कोई गुमराह न करने पाये और हम एक बेहतरीन लोकतंत्र बनकर दुनिया में बड़ी मिसाल बनकर दिखाएं. हमें हर नये समय से उदार लोकतंत्र और सबको साथ लेकर चलनेवाले लोकतंत्र की जीत होनी चाहिए, हमें इसी बात की उम्मीद करनी चाहिए.

बरकरार रही असहिष्णुता

साल 2018 का हाल उसके पिछले सालों की परिणति थी. पूरे साल असहिष्णुता रही, जैसा उसके पिछले सालों में भी देखी गयी थी. एक अजीब तरह का माहौल रहा है. यह बहुत चिंता की बात है और विमर्श का विषय है कि जो देश सहिष्णुता के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है, वहां जरा-सी बात पर कुछ लोग इकट्ठा होकर किसी को मार डालते हैं, मॉब लिंचिंग को अंजाम देते हैं. यह देश के लिए अच्छी बात नहीं है. बड़ा दुखद रहा है यह सब. पूरे साल समाज का माहौल बिगड़ा रहा और ऐसी स्थिति कहीं-कहीं अब भी बनी हुई है. यह हमारे लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है. अगर किसी ने कोई जुर्म किया हो, तो कानून के मुताबिक उसको सजा हो, लेकिन भीड़ को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए. इस एतबार से यह साल ठीक नहीं गुजरा. भीड़ को ही क्या, किसी को भी कानून अपने हाथ में लेने का कोई अधिकार नहीं है. इससे समाज पर बुरा असर पड़ता है. हर हाल में ऐसी गतिविधियों पर रोक लगायी जानी चाहिए. तभी यह मुमकिन है कि आनेवाले साल का हम बिना किसी संशय के स्वागत कर सकेंगे.

प्रो फैजान मुस्तफा
वीसी, नालसार यूनीवर्सिटी ऑफ लॉ

इस साल सुप्रीम कोर्ट के कुछ बड़े और अहम फैसले आये, जैसे कि धारा 377 और वयस्कता पर फैसले, लेकिन आधार कार्ड और राफेल पर जो फैसले आये, उनसे हमें बहुत निराशा हुई है. हालांकि, इन दोनों ही फैसलों की अब समीक्षा होने जा रही है. इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि आगामी साल, 2019 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले इतने रेशनल (तर्कसंगत) होंगे कि बौद्धिक लोग और देश की आम जनता भी उन फैसलों का स्वागत करेंगे और कोई भी उन फैसलों पर संदेह नहीं करेगा. कोर्ट से यह उम्मीद तो हमें हमेशा ही होनी चाहिए. लोगों को सबसे ज्यादा अगर किसी पर भरोसा है, तो वह ज्यूडिशियरी (न्यायपालिका) है और लोग यही सोचते हैं कि भले कहीं न्याय न मिले, लेकिन अदालतें उनके साथ न्याय करेंगी. इसलिए अदालतों से तर्कसंगत फैसले आने चाहिए, हम ऐसी उम्मीद करते हैं.

हमारे देश की एक पुरानी रवायत रही है सहिष्णुता. देश में इतनी विभिन्नताओं के साथ हम विचारों की विभिन्नता भी देखते हैं. हमारे खिलाफ आनेवाले विचारों को भी हम शांतिपूर्वक सुनते हैं और दूसरे के विचारों का सम्मान करते हैं, यही सहिष्णुता हमारे देश में सदियों से रही है. इसी का बीते वर्षों में ह्रास हुआ है, जिसे संभाले जाने की जरूरत है. हम सामने वाले को बोलने का हक देते हैं और फिर उसका अहिंसक जवाब भी देते हैं, यही सहिष्णुता है. बीते कुछ वर्षों में तो यह कम हुई और इसकी जगह हिंसा और असहिष्णुता ने ले ली. हम उम्मीद करते हैं कि आगामी साल में ऐसी परिस्थितियां न बनें और हम खुशहाल एवं शांतिपूर्ण भविष्य की ओर तेजी से बढ़ें.

बीते दिनों अजमेर में एक लिटरेरी फेस्टिवल में बॉलीवुड एक्टर नसीरुद्दीन शाह को शामिल नहीं होने दिया. यह बहुत ही भयानक है कि अब लिटरेरी फेस्टिवल को भी कट्टरपंथी हाइजैक कर लें! चाहे वह किसी भी धर्म के कट्टरपंथी हों, हमारे लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं हैं, क्योंकि हमारा लोकतंत्र स्वतंत्र विचारों का सम्मान करने के लिए जाना जाता है. समाज में हर एक को अपनी हर बात कहने का हक है. यह अधिकार उसे हमारे संविधान से मिला है, लेकिन किसी को भी कानून को अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं है, पर हो रहा है ठीक उल्टा. जो अपनी बात कहना चाहते हैं, उसे रोका जा रहा है और जो कानून अपने हाथ में ले रहे हैं, उन्हें बढ़ावा मिल रहा है. कुल मिला कर बीते साल के लेखा-जोखा में यही बात सामने आती है कि हम एक लोकतांत्रिक समाज में रहते हैं. इसलिए हमें हमेशा अपने हक और अधिकार मालूम होने चाहिए, ताकि किसी की वजह से भी किसी दूसरे को कोई परेशानी न हो. आगामी साल से हम यही उम्मीद करते हैं कि समाज में सहिष्णुता बढ़े और लोग कानून अपने हाथ में न लें.

समृद्ध हुआ भारत का कला जगत

साल 2018 भारत के कला जगत के लिए अच्छा रहा. सबसे अच्छी बात यह रही कि युवाओं ने विभिन्न कलाओं में अपनी सहभागिता बढ़ायी और बच्चे शास्त्रीयता की तरफ जाते दिखे. हम और आप तो यही सोचते हैं कि हमारे बच्चों का आजकल आधुनिक कलाओं की तरफ ज्यादा ध्यान रहता है और शास्त्रीयता से दूर भागते हैं, लेकिन पिछले कुछ सालों में हमने देखा है कि आज के बच्चे शास्त्रीय नृत्य-संगीत सीख रहे हैं. यह देख कर बहुत अच्छा लगा और उम्मीद जगी कि यह पीढ़ी कुछ बहुत अच्छा करेगी. साल 2018 में छोटे-बड़े कई फेस्टिवल भी बहुत हुए, इनमें से कई फेस्टिवल तो सरकारों ने कराये. सरकारों ने तो इन कलाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग किया, लेकिन सबसे अच्छी बात यह रही कि छोटे-छोटे स्थानों पर व्यक्तिगत तौर पर लोगों ने अच्छे-अच्छे आयोजन किये. अपनी मेहनत से लोगों ने अच्छे-अच्छे कार्यक्रम भी खूब कराये, स्मृतियां भी बहुत हुईं, जिन्हें देख कर लगा कि हम अपने पुरखों को कभी भूलनेवालों में नहीं हैं. इन्हीं स्मृतियों में राष्ट्रकवि दिनकर के नाम पर पूरे पांच दिन का फेस्टिवल हुआ, जिसमें एक से बढ़ कर एक नामी कलाकारों ने शामिल होकर उनकी गरिमा बढ़ायी है. मैं समझती हूं कि इसी तरह से ही तमाम कलाओं को आगे बढ़ाया जा सकता है. यह सब देख कर ही हम यह कह सकते हैं कि गुजरते साल ने कलाओं को समृद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी.

शोभना नारायन
मशहूर नृत्यांगना

साल 2018 में क्या कुछ हुआ, क्या घटनाएं रहीं, उनका समाज पर कितना असर हुआ, इतना तो मैं नहीं जानती, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर कहूं, तो इतना जरूर है कि एक कलाकार के तौर पर हमने बहुत अच्छा साल बिताया. हालांकि, बीच-बीच में सामाजिक ताने-बाने में कुछ गड़बड़ी होने की खबरें आयीं, लेकिन हम भारत के लोग इतनी जल्दी नहीं घबराते और नकारात्मकता को ज्यादा देर तक अपने पास नहीं रहने देते, इसलिए कह सकती हूं कि हम पुरानी बातें छोड़ते गये और लगातार आगे बढ़ते गये. आगे बढ़ना ही हमारी फितरत है. जहां तक साल 2019 का सवाल है कि उससे हमें क्या उम्मीदें रहेंगी, तो मैं समझती हूं कि मानवीयता, संवेदनशीलता, संबद्धता, सकारात्मकता और जिम्मेदारी के साथ ही शास्त्रीय कलाओं को हम आगे भी बढ़ाते रहेंगे, ताकि आनेवाली पीढ़ियां यह न कह सकें कि हमने अपनी जड़ों को छोड़ दिया.

साल 2018 में एक और बड़ी बात हुई. हमारे देश के महान रचनाकार कालीदास की रचना 'शकुंतला' पर तकरीबन 200 साल पहले ऑस्ट्रिया के एक संगीतकार ने ओपेरा लिखा था. उसका मंचन इसी साल भारत में हुआ, जो कि भारतीय कला जगत के लिए एक बड़ी घटना है. ऑस्ट्रिया से ऑर्केस्ट्रा की एक टीम आयी और उसके सिंगर ने शंकुतला को गाया, जिस पर मैंने अपना नृत्य पेश किया. दिल्ली, कोलकाता, मुंबई के अलावा कई शहरों में यह प्रोग्राम हुआ. यह बड़ी घटना रही साल 2018 की, जिसमें सैकड़ों साल पुरानी हमारी शास्त्रीयता को एक नया आयाम मिला. इसलिए मुझे 2019 से बहुत उम्मीदें हैं कि भारतीय कला जगत और भी आगे बढ़ेगा. सरकारें तो अपना काम करती हैं, लेकिन सबसे ज्यादा जरूरत लोगों की उसके साथ सहभागिता की होती है. लोग नहीं जुड़ेंगे, तो हमारी कलाएं विस्तार नहीं पा सकेंगी. इसलिए उम्मीद करती हूं कि गुजरता साल जो देकर जा रहा है, आगामी साल उसके साथ चलते हुए उसे और भी आगे तक लेकर जाये, ताकि भारत की सांस्कृतिक विरासत को दुनिया में बेहतरीन मुकाम हासिल हो सके.

संगीत व नृत्य में अनेक अहम उपलब्धियां

भरत तिवारी
कला समीक्षक

गीता चंद्रन का अपनी गुरु को समर्पित 'स्वर्णा' में मोहक नृत्य के साथ साथ 'स्वच्छ भारत मिशन' से भी खुद को जोड़ना सुखद दिखा.

संगीत रूहों की रूह है. उसके बारे में लिखा क्या जाये? इधर कानों में इसका घुलना शुरू हुआ और उधर रूह जुड़ गयी उससे, जिसे कोई ईश्वर कहता, कोई खुदा. उस्ताद अमजद अली खान के पिता- ग्वालियर के उस्ताद मरहूम हाफिज अली खान- ने उनसे कहा, सारे इंसान एक ही तरीके से आते हैं और एक ही तरीके से जाते हैं, इसलिए सबका भगवान एक ही है. हां, अगर आने-जाने का तरीका अलग होता, तो शायद दूसरे की गुंजाइश बनती. गुरु-शिष्य परंपरा को जिलाते हुए उन्होंने तीन शामों को अपने तीस से अधिक शागिर्दों के संगीत से सजवाया. दीक्षा की ओपनिंग में मौजूद भारत सरकार के संस्कृति सचिव अरुण गोयल ने खान साहब को यह भरोसा दिलाया कि दीक्षा के हर वर्ष किये जाने की उनकी इच्छा पूरी होगी. उनके वादे को सुन कर डॉ सच्चिदानंद जोशी खूब प्रसन्न दिखे. डॉ जोशी राजधानी के संगीत माहौल को उसके प्रति अपनी सांस लेती चाहत से ऊंचाई पर लिये जा रहे हैं. आइजीएनसीए की दूसरी ओवरनाइट कॉन्सर्ट में अयान अली बंगश ने अच्छा समां बांधा, दिल्ली घराने के खलीफा उस्ताद इकबाल अहमद खान ने अलसुबह कार्यक्रम को अपनी बंदिशों से विराम दिया. शुक्रिया अदा करने आये मेंबर सेक्रेटरी जोशी जी ने बताया कि उनकी इच्छा अब 24 घंटे चलनेवाला आयोजन करने की है.

इस वर्ष नृत्य की सबसे बड़ी उपलब्धि सोनल मानसिंह का राज्यसभा में पहुंचना है. उनका विस्तृत फलक कला को अवश्य वह जरूरी आयाम देगा, जिसकी भारतीय नृत्य और संगीत को लंबे अरसे से प्रतीक्षा है.

अगर संगीत ईश्वर है, तो पंडित उल्हास कशालकर का गायन उसकी आवाज है. उन्हें इस वर्ष दो बार सुना. पहली दफा उमा शर्माजी के स्वामी हरिदास तानसेन संगीत नृत्य महोत्सव में और दूसरी बार शोभा दीपक सिंह जी के श्रीराम शंकर लाल म्यूजिक फेस्टिवल में. जनवरी और मार्च में होनेवाले यह दोनों समारोह दिल्ली के पुराने संगीत प्रेमियों की जान हैं. इसके इतिहास और इससे जुड़े लोगों के चलते यह लेखक तो इन्हें 'उस्तादों का अपना उत्सव' कहता है.

अदिति मंगलदास का नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य का, बगैर उसके मूल से छेड़छाड़ किये, अंतरराष्ट्रीयकरण है. वर्ष की शुरुआत को उनके नृत्य की आणविक गति और प्रकाश के संयोजन ने सही दिशा दी, उनके द्वारा आयोजित की जा रही बैठकी 'दृष्टिकोण होम-स्टूडियो बैठक' में शायद नये वर्ष में जाना हो. संगीत के लिए उसके रसिक कितना कुछ करते रह रहे हैं- अनसंग हीरो हैं वीएसके बैठक के विनोद एस कपूर. उन्होंने मंजरी असनारे केलकर के सुंदर गायन को खूबसूरत फूलों से सजे खूबसूरत मंच पर सुनवाया और इससे पूर्व वर्ष 2018 की शुरुआत उनके फॉर्म पर बेहतरीन बैठक से हुई थी. शिवानी वर्मा कथक को गहराई से समझ, उसमें छुपे मोतियों को ढूंढ-ढूंढ के निखार रही हैं और गांधी के चंपारण से लेकर मुजफ्फर अली के नाटकों और मीरा अली के फैशन शो तक नृत्य की गरिमा को पहुंचा रही हैं. संजॉय रॉय साहित्य के साथ संगीत को भी जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के माध्यम से पोस रहे हैं, शिल्पा राव वहां मेहदी हसन साहब की गजल पर लोगों को झुमा रही थीं. पंडित बिरजू महाराज का जन्मदिन खूब कथकमय था. उनका और अमजद अली खां साहब का भ्रातृत्व, नजर न लगे, असली है. उनका सरोद वादन सुनने के लिए पंडितजी को दिसंबर की देर सर्द शाम में

बैठे देखना स्फूर्तिदायक था. पंडित जसराज जी को सुनना इस लेखक के लिए हमेशा दिल्ली की पश्चिमी आपाधापी से पूर्व की शांति की ओर पहुंच जानेवाला होता है. भगवान शिव अपनी निर्मित रुद्रवीणा को- उस्ताद बहाउद्दीन डागर द्वारा उनके पीर इनायत खान की मजार पर बजाना- सुन निश्चय ही ब्रह्म में लीन हो गये होंगे. अशोक वाजपेयी कला के लिए नॉन-स्टॉप किये जा रहे हैं. युवा नृत्यांगना आरोही मुंशी ने रजा फाउंडेशन के युवाओं को बढ़ावा देनेवाले कार्यक्रम में देखना सुखद रहा. एल सुब्रमनियम को सुन पाना इस वर्ष की उपलब्धि रही, स्पिक मैके ने यह अवसर आईआईटी में दिया. उस्ताद जाकिर हुसैन का तबला कुतुब मीनार के साये में सुनना ऐतिहासिक था मगर उनके स्वास्थ्य की नासजगी ने 'वाह कुतुब' नहीं कहने दिया, उम्मीद है कि इसी जनवरी में उन्हें फिर से सुनने के अवसर में 'वाह उस्ताद' होगा. आइआइटी दिल्ली से इंजीनियर और नीति आयोग में नियुक्त आइएएस कशिश मित्तलजी की युवा आवाज की सुंदरता देख लगा कि चाहत हो तो आप क्या नहीं हो सकते. इंद्र सभा नवाब वाजिद अली शाह से जुड़ी नृत्य नाटिका है, जिसका खूबसूरत मंचन सुश्री उमा शर्मा के निर्देशन में हुआ. शब्ज परी की भूमिका में उनकी भतीजी-शिष्या राधिका शाह का कथक उल्लेखनीय था.

इस साल संगीत के रूहानी कनेक्शन को हजरत निजामुद्दीन की पनाह में सुनी गयी कव्वालियां निश्चित रूप से जोड़ने की शक्ति रखती हैं. उनके जन्मदिन (इस वर्ष 804वां) की रात, जिसे उनका 'गुसल' (स्नान) कहते हैं, सारे कव्वालों ने और खासकर युवा सकलैन निजामी ने खूब समां बांधा, 'हर कौम रास्त राहे' गा रहे थे, कभी हजरत यमुना में 'चिल्ला' (चालीस दिन का व्रत) कर रहे थे और उन्होंने सूर्य को अर्घ्य देते हिंदुओं को देख कहा- 'हर कौम रास्त राहे/ दीन-औ किबला गाहे' यानी प्रत्येक जाति अपने ईश्वर को किसी खास-दिशा (किबला) में देखती है. रूहानी कनेक्शन ने इस लेखक को 'राजस्थान कबीर यात्रा' के सात दिन अपने कब्जे में रखा और रिहाई से पहले यात्रा के सूत्रधार राजस्थान पुलिस के अधिकारी अमनदीप सिंह कपूर के घर उनकी श्रीमती जी द्वारा आयोजित चाय-पार्टी दी गयी. वहां धर्मशाला से यात्रा में आये प्रभजोत सिंह ने अपनी तान छेड़ी, तो बुझती लौ-सा गरमा गया. देखा तो यात्रा संभालनेवाले सूत्रधार गोपाल सिंह भी आंख मूंदे खोये थे. हवाई अड्डे जाते हुए जेहन यात्रा में सुने अनेकों लोक कलाकारों की आवाजों में खोया. प्रिय गायक सरदार मदनगोपाल दासजी की जोरदार आवाज में मंच के आगे सबके साथ 'ता ता थैया' में था. दिल्ली वापस आने पर जब सांसारिक हुए तब कंधे ने कई दिनों तक कैमरे से दर्द का रोना रोया. ठुमरी फेस्टिवल में इस दफा उतना आनंद नहीं आया, लेकिन सविता देवी जी को सुन पाना और शुभा मुद्गल जी से हुई बातचीत ने इस कमी को कुछ पूरा किया.

गीता चंद्रन का अपनी गुरु को समर्पित 'स्वर्णा' में मोहक नृत्य के साथ साथ 'स्वच्छ भारत मिशन' से भी खुद को जोड़ना सुखद दिखा. जहां प्रिय गायक टीएम कृष्णा का दिल्ली गायन विवादास्पद कारणों से नहीं हो सका, वहीं दूसरी तरफ इस वर्ष की एक और उपलब्धि का कारण आइजीएनसीए रहा. वहां उस्ताद अहमद हुसैन मोहम्मद हुसैन 'गाइये गणपति जगवंदना' गाते हुए जन्माष्टमी मना रहे थे. अनुभव नाथ के साथ एक दुर्लभ माहौल तब बना, जब वहां टीमवर्क इंडिया के मिन्हाल हसन ने चार अलग-अलग देशों की चार युवतियों के वेस्टर्न क्लासिकल समूह 'वीमेन ऑफ द वर्ल्ड' का गायन आयोजित किया. एक और अनुभव रहा दिल्ली पुलिस के बैंड को सुनना. बहुत लुत्फ आया वो बैगपाइपर पर 'रमैया वस्तावैया' सुना रहे थे. अवसर था दिल्ली पुलिस के कैंट थाने के नये परिसर का उद्घाटन का. मित्र समीर श्रीवास्तव वहां के एसएचओ और संगीत के पुराने प्रेमी हैं. बारिश में भींगते हुए भी जब श्रोता बॉम्बे जयश्री रामनाथ को सुनते रहें, तो उनके गायन पर इस चाहनेवाले को कुछ कहने की क्या जरूरत है. दादा बिश्वजीत रॉय का सरोद वादन निखार पर है. सीखने की बात कहने पर उन्होंने इस लेखक से आठ वीकेंड उनको देने के लिए कहा है, देखिए.

भारतीय नृत्य संगीत ने इस वर्ष भारत रत्न से सम्मानित दिवंगत पंडित रविशंकर की पत्नी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की दिग्गज संगीतकार अन्नपूर्णा देवी को खो दिया. इसी वर्ष सितार और सुरबहार वादन को विश्वभर में ख्याति दिलाने वाले उस्ताद इमरत खान, शास्त्रीय गायक पंडित अरुण भादुड़ी, गुरु पद्मभूषण वेम्पति चिन्ना सत्यम के 49 वर्षीय पुत्र प्रसिद्ध कुचिपुड़ी नर्तक वेम्पति रविशंकर, पद्मश्री से सम्मानित प्रथम एनआरआद और आर्ट्स कौंसिल ग्रांट पाने वाले पहले भारतीय नरेश सोहल, एमएस सुब्बुलक्ष्मी की बेटी कर्नाटकी गायिका राधा विश्वनाथन, सरोद वादक पंडित बुद्धदेव दासगुप्ता, 40 वर्षीय वायलिन वादक बालाभास्कर का दुनिया छोड़ के जाना भी देखा.